1 मानव बनो

है भूल करना प्यार भी,
है भूल यह मनुहार भी,
पर भूल है सबसे बड़ी,
करना किसी का आसरा,
मानव बनो, मानव जरा।

अब अश्रु दिखलाओ नहीं,
अब हाथ फैलाओ नहीं
हुंकार कर दो एक जिससे,
थरथरा जाए धरा,
मानव बनो, मानव जरा।

उफ, हाय कर देना कहीं,
शोभा तुम्हें देता नहीं,
इन आँसुओं से सींचकर कर दो,
विश्व का कण-कण हरा,
मानव बनो, मानव जरा।

अब हाथ मत अपने मलो,
जलना, अगर ऐसे जलो,
अपने हृदय की भस्म से,
कर दो धरा को उर्वरा,
मानव बनो, मानव जरा।

– शिव मंगल सिंह 'सुमन'

शब्दार्थ

मनुहार- मनाना, विनती **अश्रु**- आँसू **धरा**-पृथ्वी

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. 'मानव बनो' शीर्षक कविता के कवि कौन हैं?
2. मानव बनने के लिए हमें कौन-कौन से कार्य करने चाहिए?
3. कवि के अनुसार सबसे बड़ी भूल क्या है?

४. अर्थ स्पष्ट कीजिए

(क) अब अश्रु दिखलाओ नहीं,
अब हाथ फैलाओ नहीं,

(ख) अब हाथ मत अपने मलो,
जलना, अगर ऐसे जलो,
अपने हृदय की भस्म से,
कर दो धरा को उर्वरा।

पाठ से आगे

1. मानव बनने की बात जो कवि द्वारा बतायी गयी है, इसके अतिरिक्त आप मानव में और कौन-कौन सा गुण देखना चाहेंगे?
2. अगर कोई समस्या आपके सामने आती है, तो इस समस्या का समाधान आप कैसे करते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।
3. "मानव होने का अर्थ है अपने जीवन पर खुद का अधिकार।" इस विचार की तर्कपूर्ण समीक्षा कीजिए।

व्याकरण

1. 'हाथ फैलाना' एक मुहावरा है, जिसका अर्थ होता है- कुछ माँगना। इस प्रकार शरीर के विभिन्न अंगों से जुड़े अनेक मुहावरे हैं। इसी तरह के पाँच मुहावरों को लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

2. इन शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए

(क) फैलाना (ख) प्यार

(ग) मानव (घ) भूल